छत्तीसगढ़ शासन
संस्कृति विभाग

डॉ. रमन सिंह
माननीय मुख्यमंत्री

श्री दयाल दास बघेल
माननीय संस्कृति मंत्री

वार्षिक प्रशासकीय प्रतिवेदन
वर्ष 2015-16

विश्व पर्यटन दिवस के अवसर पर आयोजित पंथी नृत्य

अंतर्राष्ट्रीय हॉकी, के अवसर पर आयोजित पारंपरिक लोक नृत्य

छत्तीसगढ़ शासन

संस्कृति विभाग

वार्षिक प्रशासकीय प्रतिवेदन

वर्ष 2015-16

पावस प्रसंग के अवसर पर नृत्य प्रदर्शन

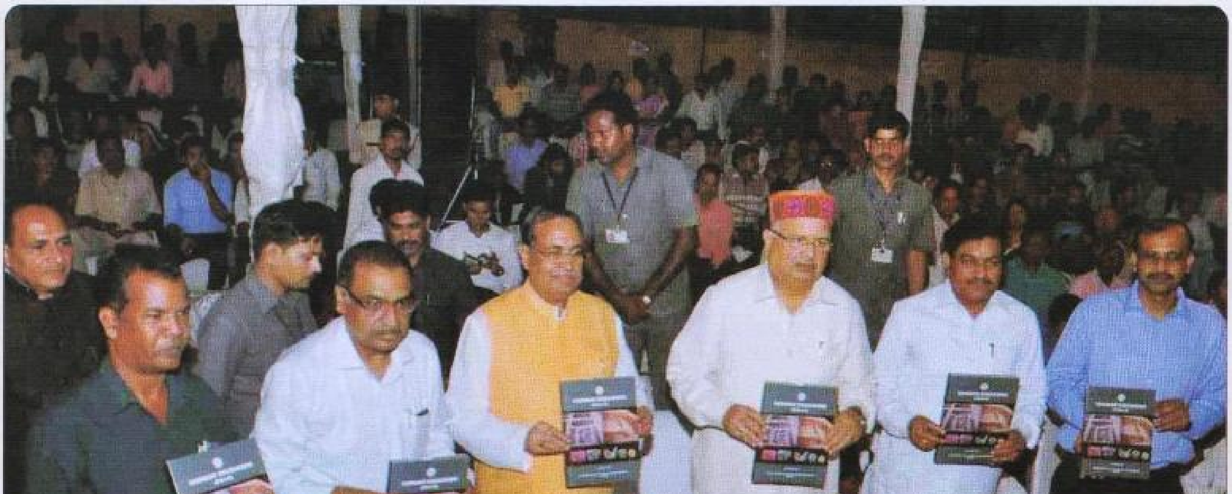

स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर तरीघाट उत्खनन प्रतिवेदन की पुस्तक का विमोचन

संस्कृति विभाग
छत्तीसगढ़ शासन

मंत्री – माननीय श्री दयाल दास बघेल

सचिवालय

सचिव – श्री संतोष मिश्र, आई.ए.एस.

अवर सचिव – श्री जे. एन. अवस्थी

संचालनालय संस्कृति एवं पुरातत्व
विभागाध्यक्ष

संचालक – श्री राकेश चतुर्वेदी, आई.एफ.एस.

आदि परब 2015 का शुभारंभ

आख्यान सप्ताह (17 से 23 सितंबर 2015) का आयोजन

विभागीय संरचना

क्र.	पद नाम	श्रेणी	वेतनमान	स्वीकृत पद	भरे पद	रिक्त पद	रिमार्क
1	संचालक / आयुक्त	प्रथम	भा.प्र.सेवा	01	01	00	
2	संयुक्त संचालक	प्रथम	15600–391007600	02	01	01	1 पद पर प्रतिनियुक्ति पर कार्यरत।
3	उप संचालक	प्रथम	15600–391006600	06	03	03	
4	उप संचालक (वित्त) (लेखाधिकारी पद से उन्नयन)	प्रथम	15600–391006600	01	01	00	
	योग :–			10	06	04	
1	सहायक संचालक	द्वितीय	15600–391005400	01	01	00	प्रतिनियुक्ति पर कार्यरत।
2	सहायक संचालक	द्वितीय	9300–34800 4400	01	01	00	राजभाषा आयोग में प्रतिनियुक्ति पर गए।
3	प्रकाशन अधिकारी	द्वितीय	15600–391005400	01	00	01	
4	मुद्राशास्त्री	द्वितीय	15600–391005400	01	00	01	
5	पुरातत्ववेत्ता	द्वितीय	15600–391005400	02	00	02	
6	ग्रंथपाल	द्वितीय	15600–391005400	01	00	01	
7	सहायक यंत्री	द्वितीय	15600–391005400	01	00	01	
8	मुख्य रसायनज्ञ	द्वितीय	15600–39105400	01	01	00	
9	पुरातत्वीय अधिकारी	द्वितीय	15600–391005400	01	00	01	
10	पुरालेख अधिकारी	द्वितीय	15600–391005400	01	00	01	
11	पुरालेखवेत्ता	द्वितीय	15600–391005400	01	00	01	
12	संग्रहाध्यक्ष	द्वितीय	15600–391005400	07	03	04	
13	संरक्षण अधिकारी	द्वितीय	9300–348004400	01	00	01	
	योग:–			20	06	14	
1	सहायक पुरालेख अधिकारी	तृतीय	9300–348004300	01	00	01	
2	अधीक्षक	तृतीय	9300–348004300	01	01	00	
3	अनुदेशक	तृतीय	9300–348004300	02	01	01	
4	कनिष्ठ लेखाधिकारी	तृतीय	9300–348004200	01	00	01	
5	सहायक अधीक्षक	तृतीय	9300–348004200	01	01	00	
6	सहायक ग्रंथपाल	तृतीय	9300–348004200	02	02	00	
7	सहायक प्रोग्रामर	तृतीय	9300–348004300	01	01	00	
8	उपयंत्री	तृतीय	9300–348004200	04	03	01	

9	मानचित्रकार	तृतीय	9300—348004200	02	02	00	
10	कलाकार	तृतीय	9300—348004200	02	02	00	
11	रसायनज्ञ	तृतीय	9300—348004200	02	01	01	
12	शोध सहायक	तृतीय	9300—348004200	02	02	00	
13	सहायक वर्ग —1	तृतीय	5200—202002800	01	00	01	
14	तकनीकी सहायक (लेखन)	तृतीय	5200—202002800	02	02	00	
15	सहायक पुरालेखपाल	तृतीय	5200—202002800	01	01	00	
16	सहायक कलाकार	तृतीय	5200—202002800	02	02	00	
17	सहायक रसायनज्ञ	तृतीय	5200—202002800	02	01	01	
18	उत्खनन सहायक	तृतीय	5200—202002800	03	03	00	
19	अनुवादक	तृतीय	5200—202002800	02	02	00	
20	सहायक वर्ग— 2	तृतीय	5200—202002400	16	15	01	—
21	स्टेनोग्राफर	तृतीय	5200—202002800	03	03	00	
22	वीडियोग्राफर	तृतीय	5200—202002800	01	01	00	
23	पर्यवेक्षक	तृतीय	9300—348004300	01	01	00	
24	सर्वेयर	तृतीय	5200—202002400	03	01	02	
25	डाटा एन्ट्री ऑपरेटर	तृतीय	5200—202002400	08	08	00	
26	मार्गदर्शक / गाईड	तृतीय	5200—202002800	04	03	01	
27	वरिष्ठ मार्गदर्शक	तृतीय	9300—348004300	03	00	03	
28	स्वागतकर्ता	तृतीय	5200—202002800	02	01	01	
29	सहायक उद्यान विकास अधिकारी	तृतीय	9300—34800+4200	01	00	01	प्रतिनियुक्ति का पद
30	स्टेनो टायपिस्ट	तृतीय	5200—202001900	05	04	01	
31	सहायक ग्रेड—3	तृतीय	5200—202001900	21	11	10	
32	वाहन चालक	तृतीय	5200—202001900	03	03	00	
33	मोल्डर / सेल्समेन	तृतीय	5200—202001900	02	00	02	
34	बाईन्डर	तृतीय	5200—202001900	01	01	00	
	योगः—			**108**	**79**	**29**	
1	भृत्य (नियमित)	चतुर्थ	4750—74401300	29	15	14	
2	चौकीदार (नियमित)	चतुर्थ	4750—74401300	11	02	09	
3	केयटेकर (संग्रहालय गैलरी हेतु)	चतुर्थ	4750—74401300	04	01	03	
	योगः—			**44**	**18**	**26**	

1	केयर टेकर	चतुर्थ	4750–74401300	12	12	00	
2	स्वीपर	चतुर्थ	4750–74401300	01	01	00	
3	चौकीदार	चतुर्थ	4750–74401300	01	01	00	
4	उद्यान रेजा	चतुर्थ	4750–74401300	01	01	00	
5	उद्यान मजदूर	चतुर्थ	4750–74401300	02	02	00	सांख्येत्तर
6	भृत्य	चतुर्थ	4750–74401300	01	01	00	
			योग :–	18	18	00	
			महायोग :–	200	127	73	

अधीनस्थ कार्यालय

जिला पुरातत्व संग्रहालय, बिलासपुर
जिला पुरातत्व संग्रहालय, जगदलपुर

विभाग के अंतर्गत स्थापित/ संबद्ध इकाईयां

छत्तीसगढ़ राजभाषा आयोग –

- छत्तीसगढ़ी भाषा को संविधान की 8वीं अनुसूची में शामिल करने का प्रयास कर रहा है। छत्तीसगढ़ी भाषा को राजकाज की भाषा बनाने दिशा में प्रयासरत है। साथ ही पाठ्यक्रम में शामिल करने की योजना है।
- छत्तीसगढ़ी के प्रचार–प्रसार के लिए साहित्यकारों से अब तक 5000 किताब खरीदें गए हैं। साथ ही पाण्डुलिपियों के प्रकाशन हेतु रू. 7.00 लाख अनुदान दिया गया है। आयोग का प्रांतीय सम्मेलन 19 एवं 20 फरवरी 2016 को कोरबा में आयोजित हुआ।

विवेकानन्द प्रबुद्ध विश्व संस्थान की स्थापना –

स्वामी विवेकानन्द जी ने कोलकाता के पश्चात् अपने जीवन का सर्वाधिक समय रायपुर में व्यतीत किया। उनके जीवन काल को स्मरणीय बनाने हेतु शासन द्वारा विवेकानन्द प्रबुद्ध विश्व संस्थान की स्थापना की गई है, जिसके अन्तर्गत स्वामी जी के विचारों के अनुकूल अंतर्राष्ट्रीय संबंध, भारत दर्शन, प्रबंधन शास्त्र, युवा कल्याण एवं ग्रामीण विकास जैसे विषयों पर अध्ययन एवं शोध कार्य संचालित किए जायेंगे। इस दिशा में कार्यवाही की जा रही है।

पदुमलाल पुन्नालाल बख्शी सृजन पीठ, भिलाई–

छत्तीसगढ़ शासन, संस्कृति विभाग के अन्तर्गत डॉ. पदुमलाल पुन्नालाल बख्शी जी की स्मृति में साहित्यिक संस्था सृजनपीठ कार्यरत है। इस संस्थान ने अपनी राष्ट्रीय गतिविधियों से अब पूरे देशभर के साहित्यकारों में अपनी पहचान और सम्मानजनक स्थान बना लिया है। सृजनपीठ के द्वारा ''सृजन पत्रिका' समयानुकूल प्रकाशित की जा रही है। सृजनपीठ के द्वारा सत्र 2015–16 में विचारगोष्ठी / संगोष्ठी तथा सुरता कार्यक्रम के अंतर्गत विभिन्न साहित्यिक आयोजन किये गये, जिनका विवरण इस प्रकार हैः–

कवि गोपाल मिश्र, बाबू रेवाराम, श्री बबन प्रसाद मिश्र, क्रांतिवीर नारायण सिंह, ठा.प्यारेलाल सिंह एवं पं. सुन्दरलाल शर्मा, पदुमलाल पुन्नालाल बख्शी, श्री केदारनाथ ठाकुर एवं क्रांतिवीर गुण्डाधूर, कवि श्री कुंजबिहारी चौबे तथा पंडित लोचन प्रसाद पाण्डेय की स्मृति में सुरता कार्यक्रम, बख्शी जयंती पर कार्यक्रम, पं. माधवराव सप्रे एवं वरिष्ठ पत्रकार चन्दूलाल चंद्राकर की स्मृति में कार्यक्रम, संविधान दिवस के अंतर्गत, मुंशी प्रेमचंद, भारत छोड़ो आंदोलन दिवस (अगस्त क्रांति) पर विचार गोष्ठी, आयोजित हुआ।

पदुमलाल पुन्नालाल बख्शी सृजनपीठ द्वारा अपने उद्देश्य के अनुकूल छत्तीसगढ़ के विभिन्न स्थानों में कार्यक्रम आयोजित किया गया है। स्वतंत्रता संग्राम सेनानी साहित्यकारों के योगदान पर विचार–विमर्श हुआ। स्वतंत्रता संग्राम सेनानी डॉ.महादेव प्रसाद पाण्डेय एवं पन्नालाल पण्ड्या का भी सम्मान किया गया। तरूण एवं युवाओं को प्रोत्साहित करने के लिए निबंध प्रतियोगिता का आयोजन भी किया गया। इसके अतिरिक्त दिल्ली, लखनऊ के डॉ. विजय कुमार कर्ण, जबलपुर के प्रो. त्रिभुवननाथ शुक्ल, इन्दौर आदि के विद्वानों ने अपने विचार समय–समय पर बख्शी सृजन पीठ की गोष्ठी में साहित्यकारों के समक्ष प्रस्तुत किये।

छततीसगढ़ सिन्धी साहित्य संस्थान का गठन –

छततीसगढ़ शासन, संस्कृति विभाग द्वारा संचालित छत्तीसगढ़ सिन्धी साहित्य संस्थान द्वारा गतिविधियों / कार्यक्रमों का नियमित आयोजन किया जा रहा है। संस्थान द्वारा बच्चों को सिन्धी भाषा की शिक्षा देने हेतु रायपुर के विभिन्न सिन्धी बाहुल्य क्षेत्रों में तीन केन्द्र, वहां की पूज्य सिन्धी पंचायतों के सहयोग से संचालित हैं। संस्थान द्वारा सिन्धी भाषा एवं संस्कृति के उत्थान हेतु विभिन्न क्रियाकलाप समय–समय पर शासन के सहयोग से संचालित किए जाते रहे हैं।

दक्षिण–मध्य–क्षेत्र सांस्कृतिक केन्द्र की सदस्यता–

विभाग द्वारा पड़ोसी राज्य से सांस्कृतिक संबंध विकसित करने एवं राज्य के कलाकारों को राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय मंच उपलब्ध कराने के उद्देश्य से वर्ष 2005 से दक्षिण–मध्य–क्षेत्र सांस्कृतिक केन्द्र, नागपुर की सदस्यता ग्रहण कर नियमित रूप से कार्यक्रम आयोजित किए जा रहे हैं। इसी प्रकार संगीत नाटक अकादमी, नई दिल्ली तथा इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र, नई दिल्ली के साथ सांस्कृतिक कार्यक्रम, अभिलेखन, कार्यशाला का आयोजन नियमित रूप से किया जा रहा है।

विभाग के दायित्व

राज्य में कोई औपचारिक या विशेष नीति के स्थान पर राज्य की परम्पराओं–मान्यताओं का समावेश एवं उनके संवर्धन के लिए सांस्कृतिक उद्देश्यों की परिकल्पना पर बल देते हुए राज्य की सांस्कृतिक गतिविधियों को नया आयाम दिया जा रहा है। जिसके अंतर्गत राज्य, अभिलेखीय एवं गैर अभिलेखीय परंपराओं के आधार पर संस्कृति को परिभाषित करेगा। राज्य, समुदायों के पारस्परिक संबन्धों को बनाये रखने एवं उनके मध्य समन्वय स्थापित करने का प्रयास करेगा। इसके अतिरिक्त सीमावर्ती पड़ोसी राज्यों के छत्तीसगढ़ राज्य के साथ सांस्कृतिक सम्बन्धों की नये परिप्रेक्ष्य में व्याख्या की जायेगी।

छत्तीसगढ़ी राजभाषा एवं राज्य की अन्य बोलियों को प्रोत्साहित किया जावेगा। संस्कृति के ज्ञान का संचयन एवं उसका उपयोग समग्र रूप से एक सतत प्रक्रिया के रूप में देखा जायेगा। सांस्कृतिक गतिविधियों को बढ़ावा देने एवं राज्य के विभिन्न सांस्कृतिक संस्थाओं को एक सूत्र में बांधने हेतु एक अंतःसंकायी समिति का निर्माण किया जायेगा, जिसमें विभिन्न कलाओं एवं संकायों के उच्च स्तरीय विशेषज्ञों का समावेश होगा। प्रदेश की आदिम संस्कृति के संरक्षकों और कलाकारों को दूरस्थ अंचलों से चिन्हांकित करने के परिणाममूलक प्रयास किए जाएंगे।

स्मारकों का संरक्षण हमारी संस्कृति नीति का विशिष्ट अंग होगा। राज्य को एक जीवंत संग्रहालय की नई परिकल्पना में रख कर विभिन्न समुदायों की संस्कृति का प्रस्तुतिकरण, नीति का एक प्रमुख भाग होगा। इसके अतिरिक्त समुदायों के जैविक–सांस्कृतिक तत्व तथा उनके मध्य परिवेशीय अंतःसम्बन्धों को नया आयाम देते हुये यह प्रयास किया जावेगा। संस्कृति को संपूर्ण जीवन का आवश्यक अंग मानकर उसका संवर्धन एवं परिवर्धन क्षेत्रीय कार्यक्रम, शोध–संगोष्ठी एवं विभिन्न उत्सवों के माध्यम से कराना विभाग का ध्येय है।

विभाग से संबंधित सामान्य जानकारी

संस्कृति विभाग का कार्य प्रदेश की संस्कृति, साहित्य एवं पुरातत्व का संवर्धन करना है तथा उसके उत्तरोत्तर विकास के लिये कार्य करते रहना है। विभाग के क्रियाकलाप मुख्यतः निम्नानुसार है–

- संस्कृति से संबंधित नीतिगत मामले व नीति निर्धारण कार्य।
- साहित्य एवं कला का विकास।
- सांस्कृतिक परम्परा का संरक्षण।
- ललित कला तथा लोक कला को प्रोत्साहन।
- छत्तीसगढ़ राज्य की कला, संस्कृति, परम्पराओं एवं जनभाषाओं का संरक्षण, संवर्धन, प्रोत्साहन एवं देश– विदेश में उसका प्रचार–प्रसार।
- अर्थाभावग्रस्त कलाकारों / साहित्यकारों को पेंशन व आर्थिक सहायता।
- अशासकीय सांस्कृतिक संस्थाओं को प्रोत्साहन व आर्थिक सहायता।
- चयनित कलाकारों / साहित्यकारों / विद्वानों को सम्मानित करने का कार्य।

- कला, संस्कृति एवं ऐतिहासिक विषयों के दुर्लभ एवं प्रामाणिक ग्रंथों, दस्तावेजों, स्मृति चिन्हों का संग्रह, प्रकाशन, प्रदर्शन तथा संबंधित व्याख्यान, संगोष्ठियों आदि का आयोजन।
- पुराने अभिलेखों का संरक्षण, संवर्धन।
- ऐतिहासिक महत्व के स्मारकों का संरक्षण तथा संग्रहालयों का विकास।
- ऐतिहासिक स्मारकों को पर्यटन स्थल के रूप में विकसित करना।
- सिनेमा अधिनियम के तहत नये सिनेमागृहों को लायसेंस।
- शासकीय कार्यों में हिन्दी एवं छत्तीसगढ़ी राजभाषा का प्रयोग तथा उसके विकास संबंधी कार्य।
- शैक्षणिक संस्थाओं में हिन्दी के साथ–साथ राजभाषा के प्रयोग तथा उसके विकास संबंधी कार्य।

पुरखौती मुक्तांगन

राज्य की संस्कृति, परंपरा, पुरातत्व, पर्यावरण और जीव–सृष्टि की सन्निधि में विकास की कल्पना को साकार करने हेतु पुरखौती मुक्तांगन का निर्माण कार्य प्रारंभ हुआ और राज्य के पारंपरिक शिल्पियों के द्वारा इसे सांस्कृतिक धरोहर के रूप में आकार प्रदान करने का संकल्प जीवन्त हुआ। पुरखौती मुक्तांगन रायपुर से लगभग 20 कि.मी. की दूरी पर ग्राम–उपरवारा में लगभग 200 एकड़ भूमि पर आकार ग्रहण कर रहा है।

माननीय राष्ट्रपति ए.पी.जे. अब्दुल कलाम महोदय द्वारा पुरखौती मुक्तांगन के प्रथम चरण का लोकार्पण किया गया। लोकार्पण समारोह में माननीय राष्ट्रपति महोदय ने निर्माणाधीन इस योजना की सराहना की। राज्य की इस महत्वाकांक्षी परियोजना के परिसर में माननीय मुख्यमंत्रीजी के हाथों पारंपरिक पौधों का रोपण कर शिल्प ग्राम निर्माण का संकल्प लिया गया। इस योजना के निर्माण कार्य हेतु ग्रामीण अभियांत्रिकी विभाग, अभनपुर और रायपुर एवं छत्तीसगढ़ पर्यटन मण्डल, रायपुर को क्रियान्वयन एजेन्सी के रूप में दायित्व सौंपा गया है।

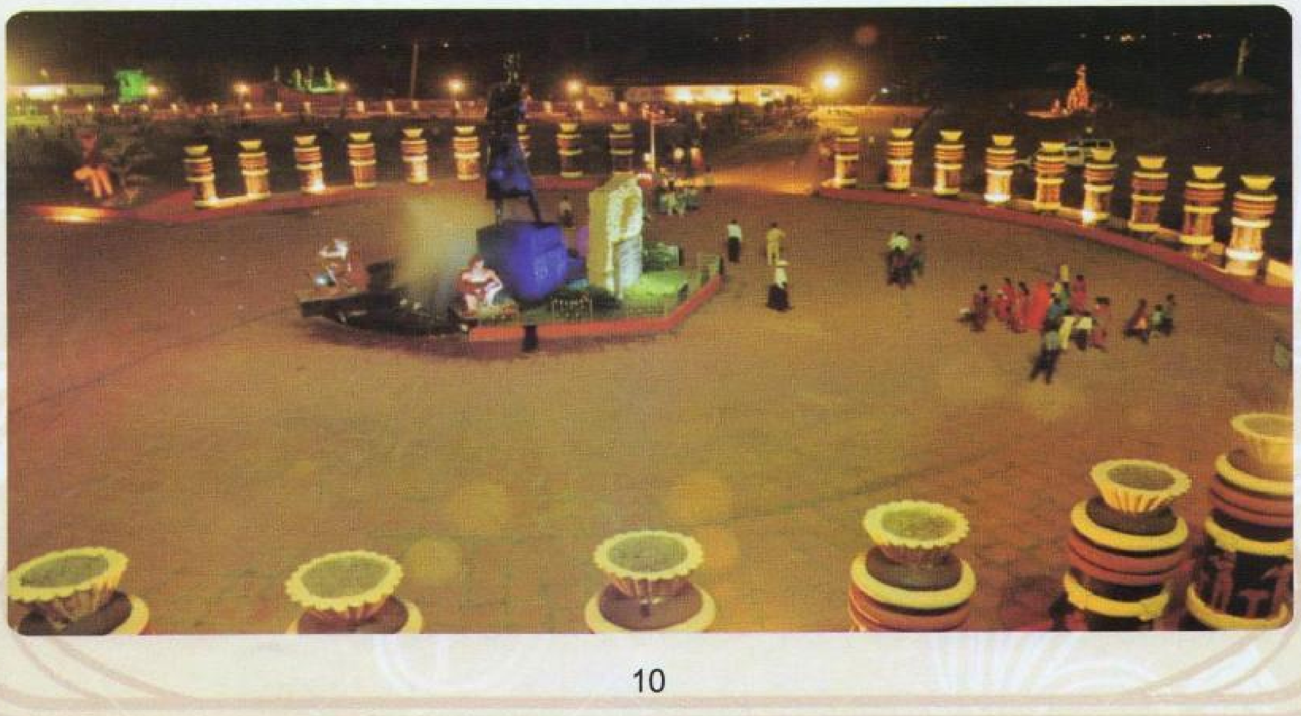

लगभग 200 एकड़ परिक्षेत्र में फैला पुरखौती मुक्तांगन परिवेशीय शैक्षणिक केन्द्र होगा। अभी तक 20 एकड़ में इसका विकास कार्य किया गया है, जिसके तहत लैण्डस्केपिंग, सिविल कार्य, फाउण्टेन एवं जल मंच का निर्माण कार्य कराया गया है। रॉक गार्डन निर्माण के लिए खनिज विभाग को 5 एकड़ भूमि अंकित करा दी गई है। इसी प्रकार मछली घर निर्माण हेतु मत्स्य विभाग को 3 एकड़ का क्षेत्र अंकित करा दिया गया है।

प्रथम चरण के विकास कार्य में भव्य प्रवेश द्वार, पर्यटक सूचना केन्द्र, पाथ–वे, माड़ियापथ, बैगा चौक, देवगुड़ी, छत्तीसगढ़ हाट, आभूषण पार्क, छत्तीसगढ़ी चौक, जनजातीय पारंपरिक शेड, मनोरंजक उद्यान गृह, सड़क एवं जल–निकास, लौह शिल्पियों की कार्यशाला एवं भित्तिचित्र का पारंपरिक जाली निर्माण, स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों की मूर्तियों का निर्माण, चहारदीवारी निर्माण, छत्तीसगढ़ का मानचित्र का निर्माण, जिसमें छत्तीसगढ़ के विभूतियों को प्रदर्शित किया गया है। भू–दृश्य सौंदर्यीकरण एवं विद्युत साज–सज्जा आदि कार्य संपन्न किये जा चुके हैं। साथ ही इस वर्ष पाथवे में फाउण्टेन एवं वाटरफॉल को प्रारंभ किया गया है। वर्तमान में पुरखौती मुक्तांगन में स्थापित पारंपरिक लोक नृत्यों के भ्रमण हेतु पाथवे का निर्माण तथा लाईट एवं साउंड इफेक्ट का कार्य करवाया गया है।

पुरखौती मुक्तांगन में विविध लोक प्रसंग कार्यक्रमों का आयोजन भी किया जाता रहा है। इस स्थल पर नवीन प्रादर्शों की स्थापना के लिये कार्यवाही आरंभ की गयी है जिसके अंतर्गत रहस बेड़ा, घोटुल, देवगुड़ी, बस्तर के जनजातीय परंपरा के आवास तथा बस्तर क्षेत्र के चयनित पुरातत्वीय स्थलों के प्रादर्श निर्माण की कार्यवाही आरंभ की गयी है। इसके साथ ही परिसर को ग्रामीण परिवेशीय परिदृश्य देने के लिये कार्य आरंभ किये जा रहे हैं।

इस परिसर में गणमान्य अतिथियों, जनप्रतिनिधियों और अधिकारियों के समूहों का भी आगमन हुआ एवं इनके द्वारा पुरखौती मुक्तांगन के स्वरूप की प्रशंसा की गई है। इस प्रकार पुरखौती मुक्तांगन परिसर राज्य में पर्यटन के साथ–साथ सांस्कृतिक एवं शैक्षणिक केन्द्र के रूप में आकार ले रहा है।

पुरातत्व

पुरातत्वीय स्थलों का संरक्षण एवं विकास कार्य

विभाग द्वारा राज्य संरक्षित स्मारकों तथा प्रदेश में विस्तृत पुरातात्विक सम्पदा के संरक्षण एवं संवर्धन के लिए वैज्ञानिक ढंग से उन्नत तकनीकों द्वारा उत्खनन, संरक्षण एवं विकास कार्य सम्पादित किए जा रहे हैं। पुरातत्वीय पर्यटन की दृष्टि से पुरास्थलों को विकसित किए जाने का कार्य प्रारंभ किया गया है, जिसके अन्तर्गत संरचनात्मक एवं रसायनिक संरक्षण कार्य, पुरातात्विक छायांकन, डाक्यूमेन्टेशन, प्रतिकृतियों का निर्माण तथा पुरातात्विक / ऐतिहासिक राष्ट्रीय / राज्य स्तरीय संगोष्ठियों का आयोजन, सांस्कृतिक धरोहरों के प्रति लोगों में जन–जागरूकता लाने के लिए विश्व–धरोहर सप्ताह जैसे अवसरों पर छायाचित्र प्रदर्शनियों का आयोजन एवं महत्वपूर्ण सांस्कृतिक विरासत स्थलों से संबंधित प्रकाशन कार्य सम्पन्न किए गए हैं।

सर्वेक्षण एवं उत्खनन कार्य

- वर्ष 2015–16 हेतु विभाग को केन्द्र सरकार के भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण द्वारा जौंग, जिला बेमेतरा तथा देवरी, जिला बलौदाबाजार–भाटापारा के उत्खनन हेतु अनुज्ञप्ति / अनुमति प्रथम बार प्राप्त हुई है।
- वर्ष 2015–16 के लिए विभागीय स्तर पर वार्षिक कार्य–योजना के तहत राजनांदगांव जिले की तहसीलों और पाटन तहसील, जिला–दुर्ग का ग्रामवार ऐतिहासिक, पुरातात्विक एवं सांस्कृतिक सर्वेक्षण कार्य किया जा रहा है।

अनुरक्षण कार्य

- अनुरक्षण शाखा द्वारा वित्तीय वर्ष 2015–16 में 13वें वित्त आयोग अनुशंसित मद से विभिन्न राज्य संरक्षित स्मारकों, उत्खनन स्थलों एवं संग्रहालयों में अनुरक्षण, निर्माण एवं विकास कार्य किये जा रहे हैं, जो इस प्रकार हैं :–

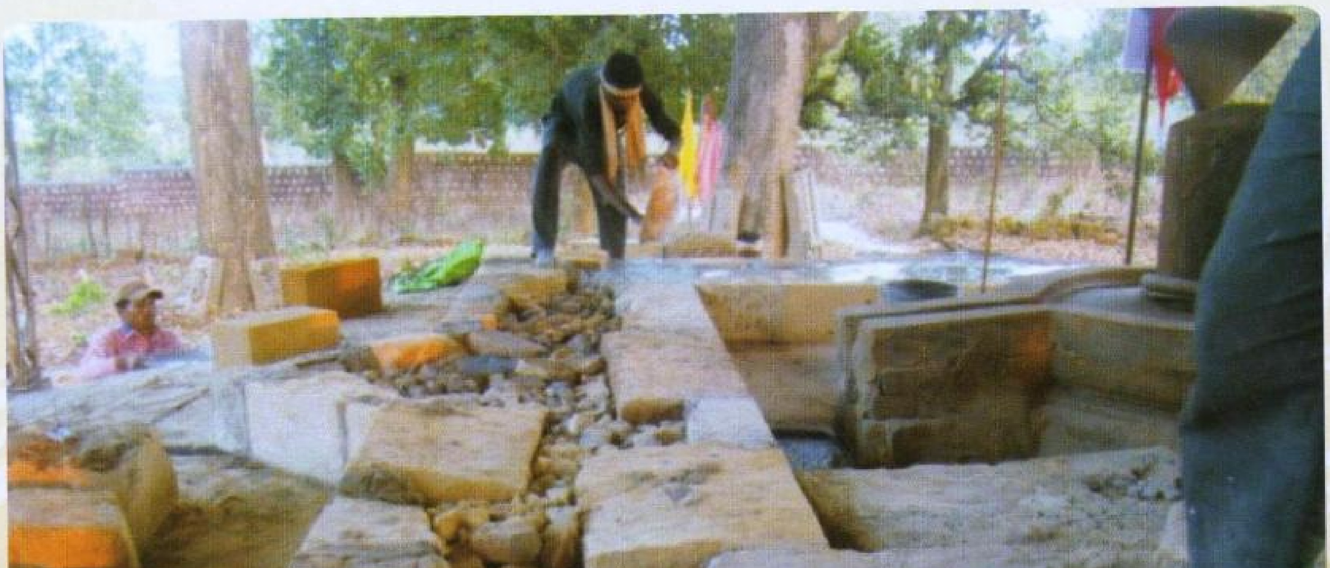

- राज्य संरक्षित स्मारक ध्वस्त मंदिर समूह सतमहला, कलचा–भदवाही, जिला सरगुजा के सभी स्मारकों का अनुरक्षण कार्य, सुरक्षा घेरा एवं विकास कार्य।

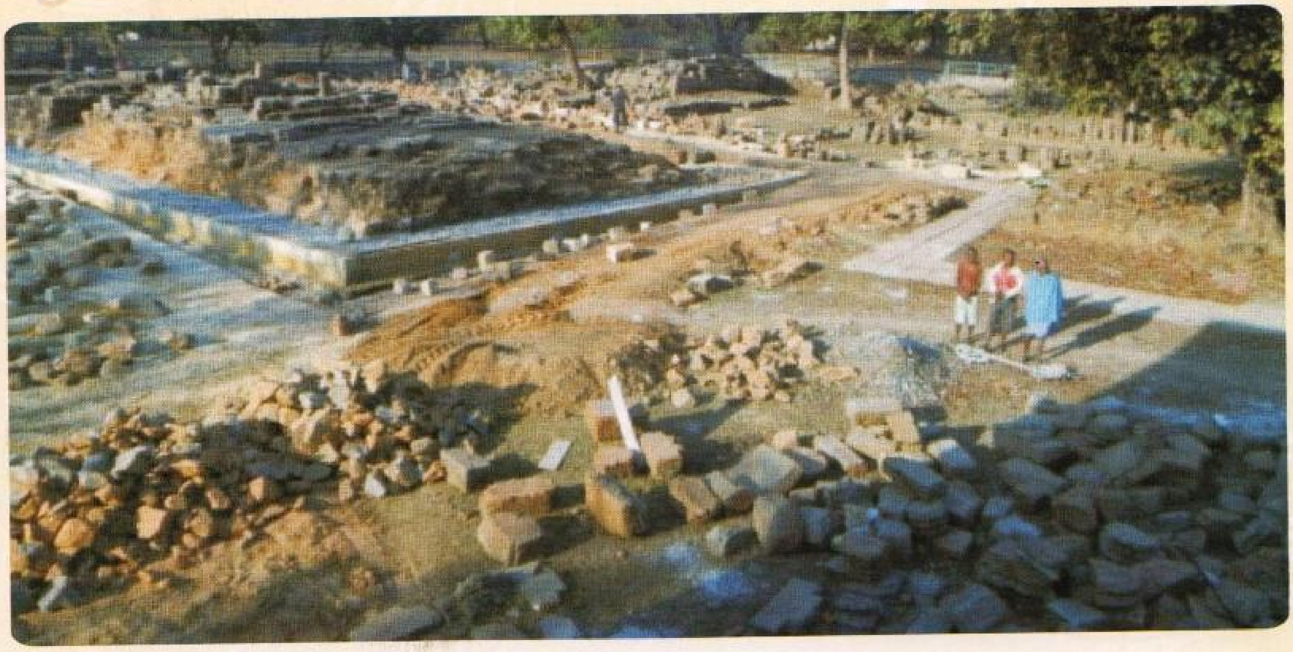

- उत्खनन स्थल महेशपुर, जिला सरगुजा के शिव मंदिर, निशान–पखना तथा कुरिया–झोरकी स्मारकों का अनुरक्षण कार्य।

  जिला पुरातत्व संग्रहालय, अम्बिकापुर, जिला सरगुजा के संग्रहालय का आंतरिक सज्जा, प्रदर्शन एवं विकास कार्य।

- महन्त घासीदास स्मारक संग्रहालय, रायपुर के परिसर का विकास, सम्पूर्ण छत्तीसगढ़ी व्यंजन के आस्वादन हेतु गढ़ कलेवा का निर्माण।

- पुरखौती मुक्तांगन संग्रहालय, रायपुर में लोक और जनजातीय शिल्प निर्माण में शिल्पों की आज से अतीत की यात्रा परम्परा को संकलित किया जा रहा है। कार्यशाला के माध्यम से छत्तीसगढ़ के परम्परागत लोकशिल्प कलाकारों के माध्यम से बस्तर क्षेत्र के मृदा, काष्ठ, लौह, गढ़वा एवं बांस शिल्प का निर्माण किया जा रहा है तथा बस्तर क्षेत्र के कलाकारों द्वारा ही मुरिया, माड़िया, अबुझमाड़िया, धुरवा, घोटुलगृह, गुड़ी, बस्तर गेट तथा नारायणपाल मंदिर की प्रतिकृति निर्माण एवं लेण्ड स्केपिंग का कार्य प्रगति पर है।

- राज्य संरक्षित स्मारक सिद्धेश्वर मंदिर, पलारी, जिला–बलौदा बाजार का अनुरक्षण एवं विकास कार्य प्रगति पर है।

- ग्रामीण पर्यटन विकास मद से राज्य संरक्षित स्मारकों सिद्धेश्वर मंदिर पलारी, जिला–बलौदाबाजार–भाटापारा, जगन्नाथ मंदिर खल्लारी, जिला–महासमुंद, कर्णेश्वर महादेव मंदिर

समूह सिहावा, जिला–धमतरी, शिवमंदिर एवं चतुर्भुजी मंदिर धमधा, जिला–दुर्ग तथा चितावरी देवी मंदिर धोबनी, जिला– बलौदाबाजार–भाटापारा में हॉल एवं टायलेट ब्लॉक का निर्माण कार्य प्रगति पर है।

- विभागीय मद से शिव मंदिर घटियारी में शेड़ निर्माण, देवी का मन्दिर, देवटिकरा में पाथवे निर्माण एवं शिव मंदिर गिरौद में चौकीदार क्वार्टर का निर्माण कार्य प्रगति पर है।

संग्रहालय

अतीत के अवशेषों के संरक्षण, प्रदर्शन, अध्ययन तथा प्राचीन ज्ञान–विज्ञान के स्रोतों के अनुसंधान के लिए संग्रहालयों की महत्वपूर्ण भूमिका है। राज्य शासन के विभिन्न संग्रहालयों के उन्नयन तथा नवीन संग्रहालयों की स्थापना के लिए विशेष रूप से सचेष्ट है। रायपुर संग्रहालय के सौन्दर्यीकरण तथा प्रदर्शन को आधुनिक स्वरूप देने की कार्यवाही की जा रही है। महंत घासीदास स्मारक संग्रहालय, रायपुर छत्तीसगढ़ राज्य के साथ ही मध्यप्रदेश का भी सबसे प्राचीन संग्रहालय रहा है। इस संग्रहालय का भारत वर्ष के प्रमुख संग्रहालयों में 10वां स्थान है। इस संग्रहालय का लोकार्पण 21 मार्च 1953 में भारत के प्रथम राष्ट्रपति डॉ. राजेन्द्र प्रसाद के कर–कमलों से किये जाने का गौरव प्राप्त है।

वर्तमान संग्रहालय भवन की स्थापना हेतु राजनांदगांव की महारानी श्रीमती ज्योति देवी ने एक लाख पच्चास हजार रूपये दान के रूप में दिये थे तथा राजनांदगांव के तत्कालीन शासक महंत घासीदास की स्मृति में इस संग्रहालय का नामकरण 'महंत घासीदास स्मारक संग्रहालय' किया गया। संग्रहालय में बहुमूल्य पुरावशेषों एवं विविध कलाकृतियों में पुरातत्व दीर्घा, प्रतिमा दीर्घा, शिलालेख दीर्घा, जीव–जंतु दीर्घा, मानव शास्त्रीय दीर्घा प्रमुख हैं। संग्रहालय परिसर में भोरमदेव तथा लक्ष्मण मंदिर सिरपुर की प्रतिकृति एवं पाषाण प्रतिमाएं भी मुक्त रूप से सहज अवलोकन हेतु प्रदर्शित है।

बिलासपुर में विभाग द्वारा संचालित संग्रहालय हेतु विभागीय भूमि–भवन की व्यवस्था की जा रही है।

इसी प्रकार जगदलपुर में संग्रहालय भवन का निर्माण कराया गया है, जिसका लोकार्पण किया जा कर जनसामान्य के लिए खोल दिया गया है। कबीरधाम जिले में उत्खनित स्थल पचराही में संग्रहालय का उद्घाटन कर प्रदर्शन किया गया है तथा सिरपुर में संग्रहालय भवन का शिलान्यास कराया गया है। प्रदेश के महत्वपूर्ण उत्खनित पुरास्थलों डमरू तथा तरीघाट में भी संग्रहालय निर्माण की योजना है। अन्य जिलों में भी भवन निर्माण, संकलन तथा प्रदर्शन की कार्यवाही की जा रही है। डीपाडीह तथा महेशपुर में भी संग्रहालय भवन निर्मित कर प्रदर्शन किया जा रहा है। जनजातीय क्षेत्रों पर विशेष रूप से ध्यान केन्द्रित किया गया है।

जिला पुरातत्व संघ द्वारा संचालित संग्रहालय

जिला पुरातत्व संघ, कोरबा में नवीन संग्रहालय भवन में प्रदर्शन का कार्य कर जनसामान्य के लिए खोल दिया गया है, इस हेतु आवश्यक राशि उपलब्ध कराई गई है। इसी प्रकार जिला पुरातत्व संघ कोरिया संग्रहालय में प्रदर्शन एवं नियमित गतिविधियां आरंभ करने हेतु अनुदान दिया गया है। जिला पुरातत्व संग्रहालय अंबिकापुर में भी जिला प्रशासन के सहयोग से प्रदर्शन का कार्य कराया गया है।

राजनांदगांव, रायगढ़, अंबिकापुर, कोरिया, कोरबा तथा धमतरी में जिला पुरातत्व संग्रहालयों का निर्माण कर उन्हें प्रदर्शन कर जनसामान्य के अवलोकन हेतु खोल दिया गया है। जिला संग्रहालयों द्वारा आयोजित संगोष्ठी, प्रदर्शनी एवं प्रकाशन के लिए भी आवश्यक सहयोग दिया जाता है। इसके अतिरिक्त कोण्डागांव, बेमेतरा, सूरजपुर, बलौदाबाजार तथा बालोद में जिला पुरातत्व संघ का गठन हो चुका है। शेष जिलों में गठन की कार्यवाही की जा रही है तथा पंचायत स्तर पर ग्राम पासिद, भोरमदेव तथा मठपुरैना में भी स्थानीय संग्रहालयों का निर्माण किया गया है।

रासायनिक संरक्षण

वित्तीय वर्ष 2015–16 में विभागीय मद के अंतर्गत महामाया मंदिर रतनपुर, जिला बिलासपुर का रसायनिक संरक्षण कार्य नवंबर–दिसंबर 2015 एवं जनवरी 2016 में कराया गया। इसके आलावा 13 वें वित्त आयोग के अन्तर्गत

शिव मंदिर नगपुरा, जिला दुर्ग, शिव मंदिर, गुमडापाल,(बस्तर), शिव मंदिर, किरारीगोढी, बिलासपुर एवं देवरानी–जेठानी मंदिर ताला, जिला बिलासपुर का रसायनिक संरक्षण का कार्य कराया जाना प्रस्तावित है।

ग्रंथालय एवं ई–लाईब्रेरी

महंत घासीदास स्मारक संग्रहालय, रायपुर के अंतर्गत महंत सर्वेश्वरदास ग्रंथालय है। वर्तमान में यह ग्रंथालय शहीद स्मारक भवन में संचालित है। ग्रंथालय में 50000 से भी अधिक पुस्तकें उपलब्ध है, इस ग्रंथालय में इतिहास, पुरातत्व, नृतत्व शास्त्र, लोक प्रशासन, हिन्दी साहित्य, पत्रकारिता, पर्यटन एवं कम्प्यूटर आदि के अतिरिक्त हिन्दी, अंग्रेजी तथा संस्कृत साहित्य से संबंधित ग्रंथ तथा गजेटियर उपलब्ध हैं। ग्रंथालय में प्रतियोगी परीक्षाओं के छात्र–छात्राओं के अध्ययन हेतु पृथक से अध्ययन कक्ष की सुविधा उपलब्ध है। ग्रंथालय में क्षेत्रीय भाषा में प्रकाशित साहित्य का उपलब्ध कराये जाने का प्रयास किया जा रहा है।

साथ ही कम्प्युटरीकृत सुविधा आरंभ कराने के अंतर्गत ग्रंथालय में पाठकों को ऑनलाईन और ऑफलाईन पुस्तकों के पाठन की सुविधा उपलब्ध कराने हेतु छत्तीसगढ़ चिप्स के माध्यम से कार्यवाही की जा रही है।

अभिलेखागार

- **अभिलेखों का स्थानान्तरण**– मध्यप्रदेश शासन मंत्रालय के अभिलेखागार में संधारित 1907 से 1956 के मध्य के अभिलेखों में छत्तीसगढ़ एवं राष्ट्रीय महत्व के लगभग 5750 नस्तियों (लगभग 50000 पृष्ठों) का चयन किया

जा चुका है। इन अभिलेखों का डिजिटाइजेशन भी आरम्भ हो गया है।

- **शोध सामग्री उपलब्ध कराना** – शोधकर्ताओं को उनकी आवश्यकतानुसार अध्ययन हेतु संधारित अभिलेख उपलब्ध कराए जा रहे हैं।
- **राष्ट्रीय पाण्डुलिपि मिशन भारत सरकार की योजनाओं का क्रियान्वयन** – अभिलेखागार के माध्यम से, राष्ट्रीय पाण्डुलिपि मिशन भारत सरकार द्वारा प्रायोजित, Manuscript Resource Centre-MRC के तहत छत्तीसगढ़ में सर्वे में दर्ज लगभग 9500 पाण्डुलिपियों का अभिलेखन किया जा रहा है।
- **अभिलेखागार भवन** – नया रायपुर में वैज्ञानिक तरीका से राष्ट्रीय स्तर का राज्य अभिलेखागार भवन बनाए जाने की तैयारी प्रगति पर है।
- **लोक अभिलेख अधिनियम व नियम** – छत्तीसगढ़ शासन के मंत्रालयों, संचालनालयों, विभागों–कार्यालयों, निगम–मण्डलों, उपक्रमों इत्यादि के ऐतिहासिक एवं महत्वपूर्ण (स्थायी तौर पर संधारण किए जाने वाले) अभिलेखों के प्रबंधन, संरक्षण व उनके उपयोग हेतु लोक–अभिलेख अधिनियम का मसविदा तैयार कर पारित किए जाने हेतु प्रस्तुत कर दिया गया है।
- **अभिलेखों की प्रदर्शनी** – छत्तीसगढ़ एवं राष्ट्रीय महत्व के सन् 1907 से 1956 के मध्य के ऐतिहासिक एवं महत्वपूर्ण स्थायी प्रकृति के अभिलेखों की प्रदर्शनी इस वर्ष लगाया जाना है। इसके लिए लगभग 25 अभिलेखों का चयन कर लिया गया है।
- सेंट्रल प्राविन्सेस एण्ड बरार के अभिलेखों से छत्तीसगढ़ में स्थायी तौर पर रखे जाने योग्य ऐतिहासिक एवं महत्वपूर्ण दस्तावेजों की 1172 नस्तियों (36832 पृष्ठ) की माइक्रोफिल्म, डी.व्ही.डी. एवं हार्ड कॉपी भोपाल से लाकर संधारित की जा रही है।
- लगभग 5000 पुस्तकों का केटलॉग तैयार करने का कार्य प्रगति पर है।

राजभाषा प्रभाग

जन कल्याणकारी योजनाएं

- मासिक वित्तीय सहायता (पेंशन) योजना : ऐसे व्यक्तियों को, जिन्होंने कला और साहित्य के विकास में योगदान दिया हो किन्तु अर्थाभावग्रस्त हैं और ऐसे लेखकों/कलाकारों के आश्रितों को जो अपने परिवार को असहाय छोड़ गये हैं, मासिक वित्तीय सहायता पहुंचाना अथवा ऐसे व्यक्तियों की मृत्यु हो

जाने पर उनकी विधवा पत्नी, नाबालिग बच्चे तथा विशेष परिस्थितियों में आश्रित वृद्ध माता–पिता, नाबालिग भाई–बहन वित्तीय सहायता के पात्र होंगे। वित्तीय वर्ष 2015–16 हेतु वित्तीय सहायता योजना (पेंशन) अन्तर्गत 109 आश्रितों को कुल राशि रूपये 26,16,000/– दिया गया है। इसके अतिरिक्त मासिक वित्तीय सहायता प्रदान करने हेतु साहित्यकारों/कलाकारों को पेंशनग्राहिता के लिए राशि की अनुपूरक बजट में मांग की गई है।

- **कलाकार कल्याण कोष योजना :** राज्य के साहित्यकारों/कलाकारों अथवा उनके परिवार के सदस्यों की लंबी तथा गंभीर बीमारी, दुर्घटना, मृत्यु अथवा दैवीय विपत्ति की स्थिति में आर्थिक सहायता देना। छत्तीसगढ़ के मूल निवासी ऐसे व्यक्ति जो शासकीय कर्मचारी या स्वायत्तशासी/अर्धशासकीय संस्थाओं के कर्मचारी न हों छत्तीसगढ़ कलाकार कल्याण कोष से सहायता योजना अन्तर्गत 34 कलाकारों को आर्थिक सहायता कुल राशि रूपये 8,50,000/– (रू. आठ लाख पचास हजार) दिया गया है।
- **विभिन्न अशासकीय संस्थाओं के संवर्धन विकास हेतु आर्थिक अनुदान योजना :** राज्य के कलाकार दलों/कलाकारों को प्रोत्साहित करना तथा प्रदर्शन हेतु समान अवसर एवं मंच प्रदान कराना। कलाकार दलों/कलाकारों के समस्त देयकों के भुगतानों की प्रक्रिया को मानक एवं पारदर्शी बनाया जाना। राज्य की ऐसी समस्त कला एवं सांस्कृतिक अशासकीय संस्थाएं जो सोसायटीज रजिस्ट्रीकरण अधिनियम 1973 (क्रमांक 44, सन् 1973) के अधीन पंजीकृत हैं तथा कम से कम तीन वर्षों से कला एवं संस्कृति के विकास, संवर्धन में सक्रिय हैं। अपंजीकृत कला दल जो कम से कम तीन वर्षों से गांवों/कस्बों/ग्रामीण इलाकों में अपने उत्कृष्ट प्रदर्शनों से लोकप्रियता हासिल कर चुके हैं। वित्तीय वर्ष 2015–16 में ऐसी अशासकीय संस्थाओं को अनुदान योजना के अंतर्गत 101 कलाकारों/संस्थाओं को सहयोग कुल राशि रूपये 1,31,82,343/– दिया गया है।
- **विभिन्न जिलों में सांस्कृतिक कार्यक्रम :** इसके अतिरिक्त विभिन्न जिलों में सांस्कृतिक आयोजनों/महोत्सवों/मेलों/मड़ई हेतु जिला प्रशासन को वित्तीय वर्ष 2015–16 में आबंटित अनुदान 26 संस्थाओं के लिए कुल राशि रूपये 263.75 लाख दिया गया है।
- विभाग द्वारा विभिन्न जिलों से मांग अनुसार कुल 479 सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन में राशि रू. 9,28,99,047/– किया गया है।

मॉडलिंग (प्रतिकृति निर्माण)

- वर्ष 2015–16 में माडलिंग शाखा के अंतर्गत पुरानी प्रतिकृतियों को कलर व रिपेयरिंग कार्य किया गया। साथ ही विभिन्न विभागीय प्रदर्शिनों में प्लास्टर कास्ट प्रतिमाओं को प्रदर्शन हेतु प्रदान किया।

गढ़–कलेवा

- छत्तीसगढ़ी पारंपरिक व्यंजनों के आस्वादन का अवसर सुलभ कराने हेतु संस्कृति विभाग के द्वारा 'गढ़–कलेवा' की स्थापना की गई है। इसका शुभारंभ माननीय मुख्यमंत्रीजी द्वारा माननीय संस्कृति मंत्रीजी की उपस्थिति में की गई है। इसमें आरंभ में लगभग 3 दर्जन पारंपरिक छत्तीसगढ़ी व्यंजन उपलब्ध कराये जा रहे हैं। जिसे कलान्तर में नई सुविधाओं के साथ आरंभ किया जाएगा।

मुक्ताकाशी मंच, सभागार एवं कला वीथिका

छत्तीसगढ़ के लोककला एवं संस्कृति के विभिन्न विधाओं के प्रचार–प्रसार तथा संरक्षण, संवर्धन हेतु आवश्यक सुविधा प्रदान करने के उद्देश्य से महंत घासीदास स्मारक संग्रहालय परिसर में कला विथिका (आर्ट गैलरी), मुक्ताकाशी मंच (ओपन एयर थियेटर) एवं सभागार (आडिटोरियम हॉल) का निर्माण किया गया है, जिसमें छत्तीसगढ़ के कलाकारों को अपनी प्रदर्शनी हेतु विभागीय नियमानुसार स्थल उपलब्ध कराया जाता है।

उद्यान एवं शिल्प मड़ई मेला परिसर

महंत घासीदास स्मारक संग्रहालय का राष्ट्रीय स्तर पर भी अपना अलग महत्व है। यहाँ पर समय–समय पर राज्य तथा राष्ट्रीय स्तर के अति–विशिष्ट व्यक्तियों तथा विदेशी पर्यटकों का आगमन होता है। उक्त स्थिति को ध्यान में रखते हुए तथा संग्रहालय परिसर को सुन्दर एवं आकर्षक बनाने के उद्देश्य से उद्यान विकसित किया गया है। इसके अतिरिक्त संग्रहालय के मेला–मड़ई परिसर में 'आकार' प्रशिक्षण कार्यशाला का आकर्षक स्थल है।

छत्तीसगढ़ बहुआयामी संस्कृति संस्थान

राज्य के विविध सांस्कृतिक गतिविधियों के प्रदर्शन, विकास, प्रचार–प्रसार, संकलन, कार्यशाला आदि के प्रत्यक्ष आयोजन से संबंधित संस्थान के विकास हेतु छत्तीसगढ़ बहुआयामी सांस्कृतिक संस्थान का गठन किया गया है। संस्थान में ख्याति प्राप्त साहित्यकारों, कलाकारों की एक अंतः संकायी समिति होगी। साथ ही विविध कलाओं एवं संकायों से चयनित उच्चस्तरीय विशेषज्ञ सम्मिलित होंगे। यह केन्द्र समुदायों के विशिष्ट सांस्कृतिक क्रियाकलापों को सर्वत्र प्रोत्साहित करेगा। इस योजना को साकार करने के उद्देश्य से आडिटोरियम, मुक्ताकाश मंच, आर्ट गैलरी आदि तैयार किया जाना है। 'बहुआयामी संस्कृति संस्थान' के निर्माण हेतु इंदिरा गांधी कृषि विश्वविद्यालय परिसर रायपुर में 10 एकड़ भूमि उपलब्ध हो चुकी है। इस हेतु कार्य का डी.पी.आर स्वीकृत हो चुका है। लोक निर्माण विभाग द्वारा कार्य की ऐजेंसी निर्धारित कर कार्य आरंभ कराया गया है जिसके लिए लोक निर्माण विभाग को राशि 2.00 करोड़ (रू. दो करोड़) मात्र की राशि प्रदान करा दी गयी है।

लोकोत्सव व पारंपरिक मेलों का विकास

राज्य की धरोहर, कला, संस्कृति एवं परंपराओं के प्रचार–प्रसार की दृष्टि से राजिम कुंभ, बस्तर दशहरा, शिवरीनारायण उत्सव, रायगढ़ में चक्रधर समारोह, सरगुजा में रामगढ़ उत्सव, बिलासपुर में बिलासा उत्सव, जांजगीर में जाज्वल्वदेव महोत्सव, सिरपुर में सिरपुर उत्सव, कांकेर में गढ़िया महोत्सव, करिया धुरवा मेला, रतनपुर उत्सव, मल्हार महोत्सव, खल्लारी महोत्सव, लोक मड़ई, डोंगरगढ़, भोरमदेव महोत्सव, ताला उत्सव आदि के आयोजन जिला प्रशासन व अन्य माध्यम से समन्वय कर संचालित किये जाते हैं, जिसमें प्रमुख रूप से छत्तीसगढ़ के कलाकारों की भूमिका होती है।

विभाग द्वारा विभिन्न जिलों से मांग अनुसार कुल 479 सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन में राशि रू. 9,28,99,047/– किया गया है।

राज्योत्सव का आयोजन

इस वर्ष राज्य का स्थापना दिवस 01 दिसवीय राज्योत्सव का आयोजन बलवीर सिंह जुनैजा, इंडोर स्टेडियम रायपुर में आयोजित राज्योत्सव पर छत्तीसगढ़ के पारम्परिक लोक जनजाति नृत्य, संगीत, गीत, और वाद्य यंत्रों पर प्रस्तुतियां संयोजित की गयी। छत्तीसगढ़ राज्य दिवस के अवसर पर अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार मेला, प्रगति मैदान, नई दिल्ली में 21 नवम्बर, 2015 को सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

राजिम कुंभ

राज्य के त्रिवेणी संगम राजिम, जहाँ प्रतिवर्ष माघ पूर्णिमा को पारंपरिक रूप से मेले का आयोजन होता था, उसे नियमित स्वरूप प्रदान कर राजिम कुंभ मेला समिति गठित किया गया है। राज्य के संस्कृति के विकास एवं पर्यटन को प्रोत्साहन प्रदान करने हेतु राजिम में शंकराचार्य, महामंडलेश्वर, मठाधीश, संत–महात्माओं एवं

जन प्रतिनिधियों के मार्गदर्शन में कुंभ मेले का आयोजन किया जाता है। इस अवसर पर देश के कोने–कोने से साधु–संतों का समागम राजिम में होता है। छत्तीसगढ़ का प्रयाग राजिम में इस आयोजन से संस्कृति, धरोहर, लोक परंपरा एवं कला का एक नया आयाम जुड़ा है। इस दौरान राष्ट्रीय स्तर व आंचलिक कलाकारों की सांस्कृतिक प्रस्तुतियाँ, आध्यात्मिक संगोष्ठी एवं विभागीय प्रदर्शनी का आयोजन किया जाता है।

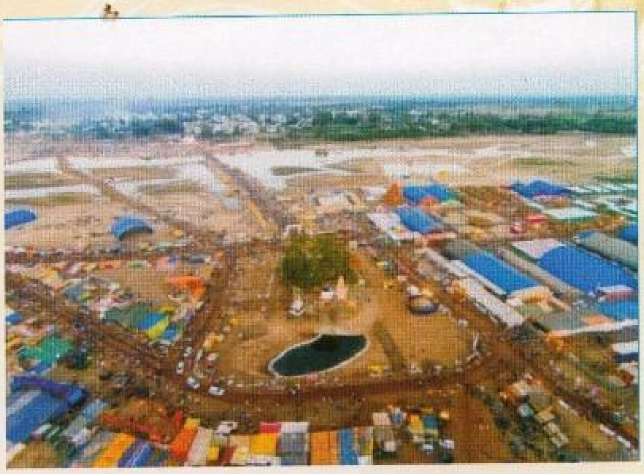

कला एवं संस्कृति

प्रदेश की संस्कृति एवं साहित्य के संरक्षण व संवर्धन हेतु विभागीय नीति के अनुरूप कार्यक्रम तैयार कर गतिविधियों का संचालन विभाग द्वारा किया जाता है, जिससे समुदायों के बीच पारंपरिक संबन्धों को बनाये रखने में, उन्हें विकसित करने में, उनके जीवन, उनकी कलाओं को उत्प्रेरित किया जा सके। स्थानीय समुदायों की अबाध सांस्कृतिक परम्पराओं की पहचान, मान्यता देना, पुनर्जीवित करना, दस्तावेजीकरण, प्रस्तुति एवं उनका प्रचार–प्रसार किया जा रहा है। साथ ही छत्तीसगढ़ के अद्वितीय सांस्कृतिक वैविध्य एवं विशिष्ट पहचान को परिभाषित कर, उसके सीमावर्ती पड़ोसी राज्यों तथा सांस्कृतिक प्रदेशों के साथ संबंध व विनिमय स्थापित किया जा रहा है। राज्य की समृद्ध जनजातीय परंपरा के संरक्षण एवं परिवर्धन हेतु विभिन्न कार्यक्रम, जिसमें जनजातीय रहन–सहन, तौर तरीके, रीति–रिवाज, लोक नृत्य, गायन एवं अन्य परंपराओं को बनाये रखने हेतु भी कार्य किया गया है। इस हेतु विभागीय कियाकलाप के साथ–साथ साहित्य, संस्कृति और कला के क्षेत्र में कार्यरत स्वायत्तशासी एवं निजी क्षेत्र में काम करने वाली संस्थाओं को आर्थिक सहायता दी गई है। विभाग के अन्तर्गत 'छत्तीसगढ़ी राजभाषा आयोग', 'स्वामी' स्वामी विवेकानंद विश्व प्रबुद्ध संस्थान', 'पदुमलाल पुन्नालाल बख्शी सृजन पीठ' एवं 'छत्तीसगढ़ सिंधी साहित्य संस्थान' गठित है, जिसके माध्यम से सांस्कृतिक एवं साहित्यिक गतिविधियों के विकास एवं संवर्धन की दिशा में हो रहे कार्यों को प्रोत्साहन दिया जा रहा है।

दस्तावेजीकरण के क्षेत्र में विभाग ने इस बार एक अभिनव कदम उठाया जिसके अंतर्गत सहपीडिया नामक संस्था के साथ एक अनुबंध किय गया है। इस अनुबंध के अनुसार सहपीडिया द्वारा राज्य के चयनित 100 सांस्कृतिक तत्वों/प्रतिमानों पर दृश्य श्रव्य एवं शाब्दिक प्रलेखन किया जाएगा तथा उन्हें अपनी बेब साईट पर अपलोड करेगा जिसके फलस्वरूप समूचे विश्व में विकीपीडिया की तरह ही सहपीडिया के माध्यम से छत्तीसगढ़ की संस्कृति को संचालित किया जा सके साथ ही इनके प्रलेखन का कार्य भी पूरा किया जा सकेगा।

इस वर्ष विभाग द्वारा कतिपय नई संस्थाओं की स्थापना हेतु प्रयास किये गये जिसे राज्य शासन द्वारा स्वीकृति प्राप्त हो गयी है। इनमें माता कौशल्या शोध पीठ की राजिम में स्थापना, छत्तीसगढ़ी नाचा पर प्रशिक्षण हेतु राजनांदगांव में छत्तीसगढ़ी नाचा केन्द्र की स्थापना तथा रायगढ़ घराने की कथक परम्परा को

संरक्षित करने रायगढ़ में चक्रधर कथक केन्द्र की स्थापना प्रमुख है। इन्हें प्रारंभ करने के लिए विभाग द्वारा कार्यवाही प्रारंभ की जा रही है। संस्कृति विभाग ने शासन को स्वामी विवेकानंद अन्तराष्ट्रीय पुरस्कार की स्थापना के लिए भी प्रयास किय जा रहे हैं तथा भारतीय एकात्मवाद के प्रणेता स्व. दीनदयाल उपाध्याय के जन्मशती के अवसर पर उनकी स्मृति में शोध वृत्ति की स्थापना भी की जा रही है इस दिशा में शासन से स्वीकृति प्राप्त हो चुकी है तथा धन राशि की उपलब्धता के आधार पर इन कार्यों का सम्पादन शीघ्र आरंभ किया जाएगा।

आयोजन एवं उत्सव

राज्य, नयी संस्थाओं/उत्सवों को प्रस्थापित करने के बजाय अस्तित्वमान पृष्ठभूमि वाले उत्सवों/संस्थाओं को प्रोत्साहित करता है ताकि राज्य की पारंपरिक संस्कृति अविच्छिन्न बनी रहे और समाज–संस्कृति के विभिन्न क्षेत्रों में अंतःसंकायी संवाद कायम रहे। इस तारतम्य में विभाग द्वारा निम्नलिखित कार्यक्रम आयोजित किये गए/सहयोग प्रदान किया गया –

- 10 से 14 अप्रेल 2015 तक अंतर्राष्ट्रीय फिल्म फेस्टिवल का आयोजन किया गया। इस अवसर पर फिल्म स्क्रीनिंग पर सौरभ शुक्ला, रघुराय, जतीनदास, पवन मल्होत्रा, मलय श्रीवास्तव, चंद्रप्रकाश द्विवेदी और अन्य के साथ वार्ता, पंजाब 1984, टर्टल कैन लाई, कहिदेबे संदेश, स्ट्रींग बाउन्ड बाई फैथ, नॉट माई लाईफ, द लेड़ी, ब्रदर इन ट्रबल, गुडबाय लेनिन, गंजे की कली, जय गंगा, थ्री सिस्टर्स, गुडबाय बाफना, बाग बहादुर, जी प्लस, छत्तीसगढ़ सिनेमा के 50 वर्ष की डाक्युमेंट्री आदि फिल्मों की स्क्रीनिंग।
- आकार–2015 के समापन अवसर पर क्राट एक्जीबिशन और बाल नाट्य 'घनचक्कर' का आयोजन।
- 27 मई 2015 को पदुमलाल पुन्नालाल बख्शी जयंती का आयोजन।
- 30 मई 2015 को हिन्दी–गोंडी यूजन सांस्कृतिक कार्यक्रम 36 से 63 का आयोजन।
- 18 जुलाई 2015 को दोपहर 'राम की शक्ति पूजा' पर श्री व्योमकेश शुक्ल, वाराणसी की उपस्थिति में नाट्य संवाद और शायं 'राम की शक्ति पूजा' का मंचन कार्यक्रम का आयोजन।
- 'पावस प्रसंग' कार्यक्रम 24 से 26 जुलाई 2015 में पं. छन्नूलाल मिश्र और सुश्री सोमबाला कुमार का ध्रुपद एवं शाष्त्रीय गायन, सुप्रसिद्ध नृत्यांगना एवं सिने कलाकार ग्रेसी सिंह और प्रो. डॉ. मांडवी सिंह द्वारा भरतनाट्यम एवं नृत्य नाटिका मेघदूत का मंचन, पद्मविभूषण पं. हरिप्रसाद चौरसिया द्वारा बांसुरी वादन आदि कार्यक्रमों का आयोजन।
- 7 अगस्त 2015 को मैथिलीशरण गुप्त जयंती के अवसर पर कवि सम्मेलन का आयोजन।
- 8 अगस्त 2015 को आलोकन कार्यक्रम के अंतर्गत 'ज्ञान संस्कृति एवं कला' विषय पर सुप्रसिद्ध संस्कृति विशेषज्ञ डॉ. कपिल तिवारी का व्याख्यान।

- स्वरांजली कार्यक्रम के अंतर्गत गीत, भजन एवं नृत्य आदि कार्यक्रमों का आयोजन।
- स्वतंत्रता दिवस की संध्या पर मुम्बई और स्थानीय दृष्टि दिव्यांग कलाकारों द्वारा देशभक्तिपूर्ण प्रस्तुतियां।

- 21 अगस्त 2015 को श्री रविन्द्र गोयल निर्देशित नाटक 'दरोगा जी चोरी हो गई' का मंचन।
- 22 अगस्त 2015 को नाटक 'राजा फोकलवा और मुशायरा' का मंचन।
- 12–13 सितंबर 2015 को लोक प्रसंग कार्यक्रम के अंतर्गत, भरथरी, चंदेनी, पंडवानी, राउत नाचा, लोकमंच और अनुकृति रंगमंडल कानपुर द्वारा ड्रामा पुरूष एवं पति, पत्नी का मंचन।
- मानस मर्मज्ञ श्री दाऊद खान द्वारा 17–23 सितम्बर 2015 तक 'राम सांस्कृतिक सौहार्द के प्रतीक' पर आधारित व्याख्यान सप्ताह का आयोजन।
- विश्व पर्यटन दिवस आयोजन के अवसर पर बस्तर बैण्ड, रंग सरोवर, कत्थक, पंथी नृत्य, के. के. पाटिल द्वारा शाष्त्रीय गायन, सीमा कौशिक, मोहन वीणा, विश्व मोहन भट्ट द्वारा लोक प्रस्तुतियां।
- मोहन राकेश द्वारा लिखित और मिर्जा मसूद निर्देशित नाटक 'आषाढ़ का एक दिन' का मंचन।
- गिरीश कर्नाड के सुप्रसिद्ध नाटक 'हयवदन' का खैरागढ़ के कलाकारों द्वारा मंचन।
- डॉ. चंद्रशेखर फनसलकर लिखित नाटक 'टैक्स फ्री' का मंचन।
- 1 नवंबर 2015 को राज्य स्थापना दिवस के अवसर पर अलंकरण समारोह, छत्तीसगढ़ी लोक कलाकारों की और गायक कैलाश खेर की प्रस्तुतियां।
- वसन्तवीर उपाध्याय द्वारा निर्देशित संगीत नाटिका 'रावण–आत्माभिव्यक्ति की यात्रा' का मंचन।
- रोटरी क्लब रायपुर और एनआईटी के ड्रामेटिक क्लब की संगीतमय प्रस्तुति एवं लघु नाटिका 'पापा कहते हैं' और 'भोलवा के परान' का मंचन।
- 27–29 नवंबर 2015 तक आदि परब–2 आयोजन के अंतर्गत राष्ट्रीय आदिवासी प्रदर्शन कला का नेशनल स्कूल ऑफ ड्रामा के सहयोग से मंचन।
- आदि सर्जना आयोजन के अंतर्गत कला विथिका में गोंड, भील, सौंरा, मुरिया, उरांव, और वारली आदिवासी कलाकारों द्वारा निर्मित चित्रकला प्रदर्शनी का आयोजन।
- नशा मुक्ति अभियान पर केन्द्रित एकल नाट्य प्रस्तुति 'सिसकियां' का मंचन।
- स्मृति आशीर्वादम नृत्य श्रद्धांजलि, स्वामी विवेकानंद जयंती के अवसर पर व्याख्यान, अनुनाद–इंडो चाईना म्यूजिक कंसर्ट, मुक्तिबोध राष्ट्रीय सम्मान, वसंत पंचमी के अवसर पर भरतम् नृत्यांजलि आदि कार्यक्रम आयोजित किए गए।

- स्वामी विवेकानंद जयंती के अवसर पर श्री मनोज श्रीवास्तव, श्री कनक तिवारी, श्री शिवराज सिंह एवं श्री कुमार प्रशांत के द्वारा व्याख्यान दिया गया।
- आदि परब – राष्ट्रीय नाटय विद्यालय, दिल्ली एवं संस्कृति विभाग के संयुक्त आयोजन में छत्तीसगढ़ के पारंपरिक जनजातीय नृत्य संगीत के अतिरिक्त अन्य पड़ोसी राज्य आन्ध्रप्रदेश, झारखंड, उड़ीसा, मध्यप्रदेश एवं महाराष्ट्र के कलाकारों के दल द्वारा सांस्कृतिक प्रस्तुतियां मंचित की गई हैं जिससे सांस्कृतिक समन्वय की दिशा में अग्रसर होने के अवसर की संभावना बढ़ी हैं।
- छत्तीसगढ़ शासन संस्कृति विभाग के अंतर्गत सफर मुक्ताकाश, लोकगीत नृत्य, गीष्मकालीन शिविर, कवि–दिवस, पावस प्रसंग, चक्रधर समारोह, हिन्दी दिवस समारोह, शास्त्रीय संगीत समारोह आदि का आयोजन संपन्न किया गया है, जो भविष्य में भी निरन्तर जारी रहेगा।

विभाग के अंतर्गत स्थापित राज्य स्तरीय सम्मान –

- **पं. सुन्दरलाल शर्मा सम्मान** – साहित्य/आंचलिक साहित्य के क्षेत्र में उत्कृष्ट योगदान हेतु राज्य स्तरीय सम्मान प्रदान किया जाता है। वर्ष 2015 का यह सम्मान श्री हरिहर वैष्णव, कोण्डागांव को किया गया है।
- **चक्रधर सम्मान** – कला/शिल्प कला के क्षेत्र में उत्कृष्ट योगदान हेतु राज्य स्तरीय सम्मान प्रदान किया जाता है। वर्ष 2015 का यह सम्मान श्री जलील रिजवी, रायपुर को दिया गया है।
- **दाऊ मंदराजी सम्मान** – लोक कला के क्षेत्र में उत्कृष्ट योगदान हेतु राज्य स्तरीय सम्मान प्रदान किया जाता है। वर्ष 2015 का यह सम्मान श्री पूनम तिवारी, राजनांदगांव को दिया गया है।

- इसके अतिरिक्त अन्य विभागों द्वारा दिए जाने वाले सम्मानों के सम्मान समारोह का समन्वय एवं अलंकरण समारोह संस्कृति विभाग द्वारा आयोजित किया गया।

संगोष्ठी –

- संस्कृति विभाग के अंतर्गत सांस्कृतिक परंपराओं के प्रचार–प्रसार तथा मूल स्थान व निर्धारित स्थानों पर प्रदर्शनों की संकल्पना को कियान्वित करने हेतु राज्य की परंपराओं तथा सांस्कृतिक व कलात्मक संपदा का निम्नानुसार प्रदर्शन जनजागरूकता के उद्देश्य से किया गया/कराया जा रहा है –
- भारतीय पुरातत्व में नवीन शोध–बौध कला और स्थापत्य के विशेष संदर्भ में विषय पर केन्द्रित 3 दिवसीय

राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन रायपुर एवं सिरपुर में किया गया। आयोजन में देश के विभिन्न राज्यों के विद्वानों के शोध आलेखों के पठन एवं छायाचित्र सहित प्रस्तुतिकरण के साथ–साथ छत्तीसगढ़ अंचल से ज्ञात एवं प्रकाशित बौद्ध स्थापत्य एवं मूर्तिकला, जिसमें हाल ही में किये गये उत्खनन से प्राप्त प्रमाण भी सम्मिलित हैं, पर सारगर्भित चर्चा से आयोजन में पधारे विद्वान भी परिचित हुए तथा राष्ट्रीय स्तर पर छत्तीसगढ़ का पुरा–वैभव प्रचारित प्रसारित हुआ। इस आयोजन में आमंत्रित विद्वानों को सिरपुर भी भ्रमण करवाया गया तथा समापन कार्यक्रम भी सिरपुर में संपन्न किया गया।

प्रदर्शनी –

संस्कृति विभाग के अंतर्गत सांस्कृतिक परंपराओं एवं ऐतिहासिक धरोहरों के प्रचार–प्रसार तथा मूल स्थान व निर्धारित स्थानों पर प्रदर्शनों की संकल्पना को क्रियान्वित करने हेतु राज्य की परंपराओं तथा सांस्कृतिक व कलात्मक संपदा का प्रदर्शन जनजागरूकता के उद्देश्य से कराया जा रहा है।

संचालनालय के कलादीर्घा में वर्ष भर विभिन्न विषयों पर विविध कलाकारों के प्रदर्शनियां संचालित होते रहती है। इसी में संस्कृति विभाग द्वारा भी स्वतः समय–समय पर प्रदर्शनियों का संयोजन किया जाता है जिसके अंतर्गत इस वर्ष छत्तीसगढ़ के पुरातत्वीय स्थल पर प्रदर्शनी एवं स्वामी विवेकानंद की जीवनी पर एक सहयोगात्मक फोटोप्रदर्शनी का आयोजन विशेष उल्लेखनीय है। विभाग के सहयोग से एक पुस्तक प्रदर्शनी का आयोजन भी लेखक–पुस्तक सम्वाद के अवसर पर इस दीर्घा में किया गया था। संबंधित अन्य विवरण निम्नानुसार हैं :–

- जनसामान्य एवं विद्यार्थियों में इतिहास एवं पुरातत्व के प्रति जागरूकता लाने के लिए 19 से 25 नवम्बर, 2015 को 'विश्व धरोहर सप्ताह' के अवसर पर छत्तीसगढ़ के प्राचीन स्मारकों एवं उत्खनित स्थलों पर केंद्रित पुरातत्वीय प्रदर्शनी के साथ–साथ विभागीय सर्वेक्षण एवं उत्खनन कार्यों के प्रचार प्रसार हेतु संगोष्ठी और विद्यार्थियों हेतु तात्कालिक भाषण एवं प्रतियोगिता परीक्षा का आयोजन किया गया। इस अवसर पर इतिहास और पुरातत्व के क्षेत्र में विशेष योगदान देने वाले विद्वानों श्री ए. के. शर्मा, डॉ. रमेन्द्रनाथ मिश्र, प्रो. एल. एस. निगम, श्री जी. एल. रायकवार और प्रो. आर. एन. विश्वकर्मा के व्याख्यान भी आयोजित हुए।
- राजिम कुंभ, सिरपुर महोत्सव, रामगढ़ महोत्सव (आषाढ़स्य प्रथम दिवसे) एवं बस्तर दशहरा में नियमित रूप से प्रदर्शनी का आयोजन किया जाता है।
- आदिसर्जना कार्यक्रम के अंतर्गत लोकचित्र कला के स्थानीय एवं पड़ोसी राज्यों के जनजातीय कलाकारों की कार्यशाला आयोजित कर उनकी कृतियों की प्रदर्शनी का आयोजन किया गया।

फोटोग्राफी शाखा (अनुनाद) –

महंत घासीदास स्मारक संग्रहालय परिसर में फोटो अभिलेखागार व 'अनुनाद' संगीत प्रकोष्ट नवीन भवन का निर्माण व आंतरिक साज–सज्जा तैयार कर विभागीय कार्यक्रमों छत्तीसगढ़ी गीत–संगीत एवं अन्य दृश्य–श्रव्य माध्यमों की ऑडियो, वीडियो केसेट्स, सी.डी., डी.वी.डी. संग्रहित एवं प्रदर्शित की गई है। वर्तमान में दृश्य–श्रव्य माध्यमों के सामग्रीयों की इन्डेक्सिंग/कैटलागिंग/लेबलिंग आदि से संबंधित कार्य प्रगति पर है।

लोक शिल्पियों की कार्यशाला सह प्रशिक्षण 'आकार'–

आकार प्रशिक्षण शिविर के अंतर्गत ढोकरा शिल्प, मृदा शिल्प, म्यूरल आर्ट, पेंटिंग, ड्राई लावर, पट चित्र, मधुबनी, क्ले आर्ट, रजवार, जूट शिल्प, बोनसाई, फड़ पेन्टिंग तथा नाट्य प्रशिक्षण के प्रतिष्ठित राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त शिल्प गुरुओं द्वारा बड़ी संख्या में प्रशिक्षणार्थियों को प्रशिक्षण दिया जाता है। इन शिविरों में नाटक व शास्त्रीय नृत्यों का प्रशिक्षण भी दिया जाता है। स्थानीय प्रशासन के सहयोग से लोक शिल्पियों की कार्यशाला रायपुर के अतिरिक्त बिलासपुर, राजनांदगांव, अंबिकापुर एवं जदलपुर में भी आयोजित किया गया, जिसमें बड़ी संख्या में प्रशिक्षणार्थियों के द्वारा प्रशिक्षण प्राप्त किया गया।

बजट विहंगावलोकन वर्ष 2015–16

(आकड़े हजार रू. में)

कमांक	बजट का मद	आयोजनेत्तर	आयोजना	योग
1	2	3	4	5
लेखाशीर्ष 2202				
	102 आधुनिक भारतीय भाषाओं और साहित्य का संवर्धन	1,28,03	1,00,30	2,28,33
योग– 2202		**1,28,04**	**1,00,30**	**2,28,33**
लेखाशीर्ष 2205				
	101 ललित कलाओं की शिक्षा	9,00	1,25,00	1,34,00
	102 कलाओं और संस्कृति का संवर्धन	16,00	17,08,00	17,24,00
	103 पुरातत्व	5,33,52	2,91,00	8,24,52
	104 अभिलेखागार	1,36,46	0	1,36,46
	107 संग्रहालय	3,52,47	0	3,52,47
योग –2205		**10,47,45**	**2,12,400**	**31,71,45**
लेखाशीर्ष 4202				
	106 संग्रहालय	0	1,50,00	1,50,00
	800 अन्य व्यय		10,00,00	10,00,00
योग –4202		**0**	**11,50,00**	**11,50,00**
	मांग संख्या 41 आदिवासी उपयोजना, 2205 कला और संस्कृति			
	107 संग्रहालय	0	4,85,00	4,85,00
योग 2205		**0**	**4,85,00**	**4,85,00**
लेखाशीर्ष 3454				
	110 गजेटियर एवं सांख्यिकी विवरण	0	44,29	44,29
योग 3454		**0**	**44,29**	**44,29**
मांग संख्या 26 13वें वित्त आयोग की अनुशंसा के अंतर्गत प्राप्त सहायता अनुदान				
	2205–103	0	7,25,00	7,25,00
	4202–106	0	4,00,00	4,00,00
योग 2205+4402		**0**	**11,25,00**	**11,25,00**
महा योग		**11,75,49**	**50,28,59**	**62,04,08**

छत्तीसगढ़ के राज्य संरक्षित स्मारकों की सूची

(आकड़े हजार रू. में)

क्र.	स्मारकों के नाम	स्थान	जिला
01.	कुलेश्वर मंदिर	नवागांव	धमतरी
02.	कर्णेश्वर महादेव मंदिर समूह	सिहावा	धमतरी
03.	शिव मंदिर	चन्दखुरी	रायपुर
04.	प्राचीन ईंट मंदिर	नवागांव	रायपुर
05.	शिव मंदिर	गिरौद	रायपुर
06.	सिद्धेश्वर मंदिर	पलारी	बलौदाबाजार–भाटापारा
07.	चितावरी देवी मंदिर	धोबनी	बलौदाबाजार–भाटापारा
08.	प्राचीन भग्न मंदिर	डमरू	बलौदाबाजार–भाटापारा
09.	मावली देवी मंदिर	तरपोंगा	बलौदाबाजार–भाटापारा
10.	फणिकेश्वरनाथ महादेव मंदिर	फिंगेश्वर	गरियाबंद
11.	आनंद प्रभु कुटी विहार	सिरपुर	महासमुंद
12.	स्वास्तिक विहार	सिरपुर	महासमुंद
13.	जगन्नाथ मंदिर	खल्लारी	महासमुंद
14.	नागदेव मंदिर	नगपुरा	दुर्ग
15.	शिव मंदिर	नगपुरा	दुर्ग
16.	विष्णु मंदिर	बानवरद	दुर्ग
17.	शिव मंदिर एवं चतुर्भुजी मंदिर	धमधा	दुर्ग
18.	बहादुर कलारिन की माची	चिरचारी	बालोद
19.	महापाषाणीय स्मारक	करहीभदर	बालोद
20.	महापाषाणीय स्मारक	धनोरा	बालोद
21.	महापाषाणीय स्मारक	कुलिया	बालोद
22.	महापाषाणीय स्मारक	मुजगहन	बालोद
23.	महापाषाणीय स्मारक	करकाभाट	बालोद
24.	मढ़ियापाट (भग्न मंदिर)	डौण्डीलोहारा	बालोद
25.	प्राचीन मंदिर	डौण्डीलोहारा	बालोद
26.	कुकुरदेव मंदिर	खपरी	बालोद
27.	शिव मंदिर	पलारी	बालोद
28.	शिव मंदिर	जगन्नाथपुर	बालोद
29.	कपिलेश्वर मंदिर समूह	बालोद	बालोद
30.	बजरंगबली मंदिर	सहसपुर	बेमेतरा
31.	शिव मंदिर	सहसपुर	बेमेतरा
32.	घुंघुसराजा मंदिर	देवकर	बेमेतरा

33.	शिव मंदिर	बिरखा	राजनांदगांव
34.	भोरमदेव मंदिर	चौरा	कबीरधाम
35.	छेरकी महल	चौरा	कबीरधाम
36.	मण्डवा महल	चौरा	कबीरधाम
37.	महामाया मंदिर	रतनपुर	बिलासपुर
38.	प्राचीन शिव मंदिर	किरारीगोढ़ी	बिलासपुर
39.	देवरानी–जेठानी मंदिर	अमेरी कापा (ताला)	बिलासपुर
40.	शिव मंदिर	गनियारी	बिलासपुर
41.	धूमनाथ मंदिर	सरगांव	मुंगेली
42.	लक्ष्मणेश्वर मंदिर	खरौद	जांजगीर–चांपा
43.	शैलाश्रय	सिंघनपुर	रायगढ़
44.	कबीरपंथी सतगुरूओं की तीन मजार	कुदुरमाल	कोरबा
45.	गुड़ियारी मंदिर	केशरपाल	बस्तर
46.	शिव मंदिर	घुमरमुंडपारा	बस्तर
47.	शिव मंदिर	गुमड़पाल	बस्तर
48.	शिव मंदिर	छिंदगांव	बस्तर
49.	प्राचीन भग्न ईंटों के मंदिर	गढ़ धनोरा	कोण्डागांव
50.	बुद्ध चैत्य गृह	भोंगापाल	कोण्डागांव
51.	बत्तीसा मंदिर	बारसूर	दंतेवाड़ा
52.	शिव मंदिर	देवटिकरा	सरगुजा
53.	देउर मंदिर	महारानीपुर	सरगुजा
54.	देवी का मंदिर (छेरिका देउर)	देवटिकरा	सरगुजा
55.	सतमहला मंदिर समूह	कलचा–भदवाही	सरगुजा
56.	भग्न मंदिर (शाला भवन के पास)	डीपाडीह	बलरामपुर
57.	भग्न मंदिर (रानी तालाब के पास)	डीपाडीह	बलरामपुर
58.	शिव मंदिर	बेलसर	बलरामपुर

छत्तीसगढ़ में स्थित केन्द्र संरक्षित स्मारकों की सूची

क्र	स्मारकों के नाम	स्थान	जिला
01.	चन्द्रादित्य मंदिर	बरसूर	दंतेवाड़ा
02.	गणेश प्रतिमा	बारसूर	दंतेवाड़ा
03.	मामा भांजा का मंदिर	बारसूर	दंतेवाड़ा
04.	दंतेश्वरी मंदिर में रखी प्राचीन प्रतिमाएं	दंतेवाड़ा	दंतेवाड़ा
05.	महादेव मंदिर	बस्तर	जगदलपुर
06.	भैरमदेव मंदिर	भैरमगढ़	बीजापुर
07.	दंतेश्वरी मंदिर	दंतेवाड़ा	दंतेवाड़ा
08.	काष्ठ निर्मित मृतक स्मृति स्तंभ	डिलमिली	जगदलपुर
09.	ईंटों का टीला	गढ़धनौरा	बस्तर
10.	महापाषाणीय स्मारक (उर्सकल)	गमावाड़ा	दंतेवाड़ा
11.	नारायण मंदिर	नारायणपाल	जगदलपुर
12.	कारली महादेव मंदिर	समलूर	दंतेवाड़ा
13.	विशाल विष्णु मंदिर	जांजगीर–चांपा	जांजगीर–चांपा
14.	छोटा मंदिर	जांजगीर–चांपा	जांजगीर–चांपा
15.	ईंट निर्मित सबरी मंदिर	खरौद	जांजगीर–चांपा
16.	ईंट निर्मित इंदल देउल मंदिर	खरौद	जांजगीर–चांपा
17.	प्राचीन गढ़	मल्हार	बिलासपुर
18.	पातालेश्वर महादेव मंदिर	मल्हार	बिलासपुर
19.	महादेव मंदिर	पाली	कोरबा
20.	कंठी देउल मंदिर	रतनपुर	बिलासपुर
21.	रतनपुर स्थित समस्त स्मारक	रतनपुर	बिलासपुर
22.	पाली अभिलेख	सेमरसल	मुंगेली
23.	केशवनारायण मंदिर	शिवरीनारायण	जांजगीर–चांपा
24.	चन्द्रचूड़ मंदिर	शिवरीनारायण	जांजगीर–चांपा
25.	महादेव मंदिर	तुमान, कटघोरा	कोरबा
26.	शिव मंदिर (अड़भार मंदिर)	अड़भार, सक्ती	जांजगीर–चांपा
27.	चितौरगढ़	लाफा, पाली	कोरबा

28.	कोटगढ़ किला	बरगवां	
29.	अजमेरगढ़ किला	आमनाला	बिलासपुर
30.	काशीगढ़ किला	बावनबाड़ी	बिलासपुर
31.	मंदिर	बेलपान	बिलासपुर
32.	भग्न मंदिर	कटघोरा	कोरबा
33.	कोटमी किला	कोटमी	जांजगीर–चांपा
34.	शिव मंदिर	देवबलोदा	दुर्ग
35.	सीता देवी मंदिर एवं सतीस्तंभ	देवरबीजा	बेमेतरा
36.	भांड देउल	आरंग	रायपुर
37.	महादेव मंदिर	नारायणपुर, कसडोल	बलौदाबाजार
38.	आदित्य को समर्पित मंदिर	नारायणपुर, कसडोल	बलौदाबाजार
39.	राजीवलोचन मंदिर	राजिम	गरियाबंद
40.	सीताबाड़ी	राजिम	गरियाबंद
41.	रामचन्द्र मंदिर	राजिम	गरियाबंद
42.	लक्ष्मण मंदिर	सिरपुर	महासमुंद
43.	सिरपुर स्थित समस्त टीले	सिरपुर	महासमुंद
44.	सीता बेंगरा गुफा	उदयपुर	अम्बिकापुर
45.	जोगीमारा गुफा	उदयपुर	अम्बिकापुर

प्रकाशन

- विभाग ने प्रकाशन के क्षेत्र में एक अभिनव प्रयास प्रारंभ किया है जिसके अंतर्गत निजी प्रकाशक के साथ सहयोगात्मक प्रकाशन के रूप में छत्तीसगढ़ के मूर्धन्य रचनाकारों की कृतियों के प्रकाशन तथा बस्तर के आदिवासी भाषा–बोलियों पर ग्रंथों के प्रकाशन का कार्य किया गया। इसके अतिरिक्त विभाग द्वारा आयोजित किये जाने वाले कार्यक्रमों पर प्रकाशन तथा विभाग की वार्षिक शोध पत्रिका 'कोसल–8' प्रकाशित की गयी। साथ ही वर्ष भर चलने वाले विविध आयोजनों से संबंधित प्रकाशन भी मुद्रित कराये गये।
- विभाग द्वारा विभिन्न साहित्यिक, सांस्कृतिक विषयों पर पुस्तकों का प्रकाशन कराया गया, जिनमें छत्तीसगढ़ के विवेकानंद, रामकथा, मुक्तिबोध रचनावली, वास्तु शिल्पी डॉ. जयदेव बघेल, बस्तर के आदिवासी एवं लोक शिल्प, तरीघाट उत्खनन का प्रतिवेदन, देवालय, प्रोटेक्टेड मान्यूमेन्ट्स आफ छत्तीसगढ़ एट ए ग्लांस, आदि परब, तपश्चर्या एवं आत्मचिंतनः गुरूघासीदास आदि विशेष उल्लेखनीय है।

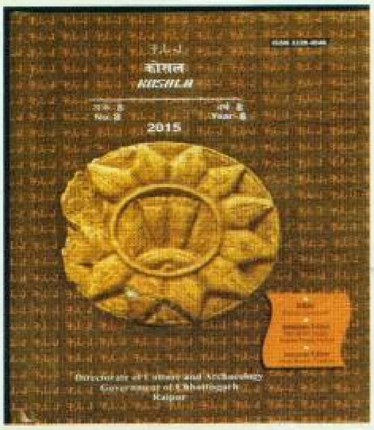

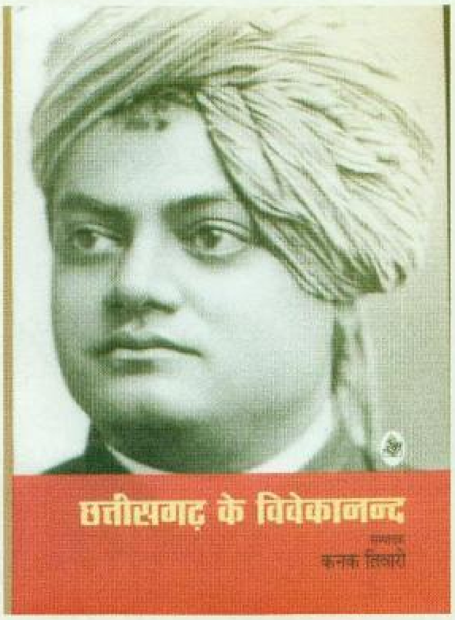

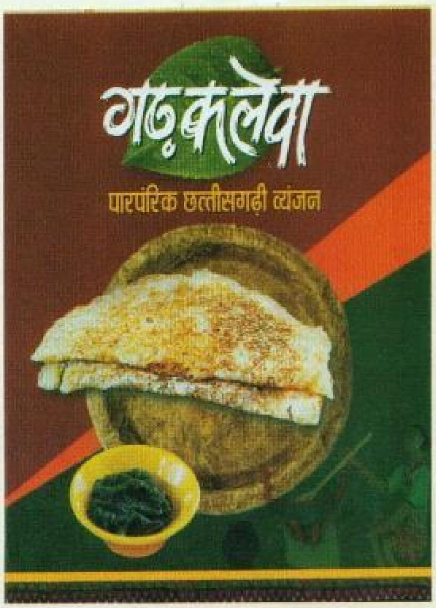

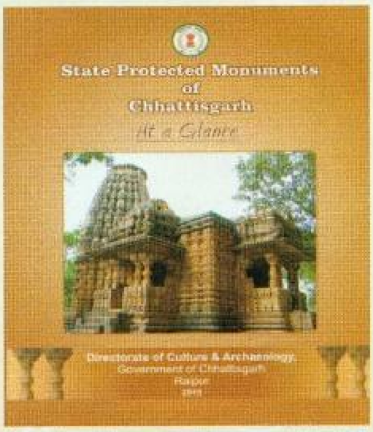

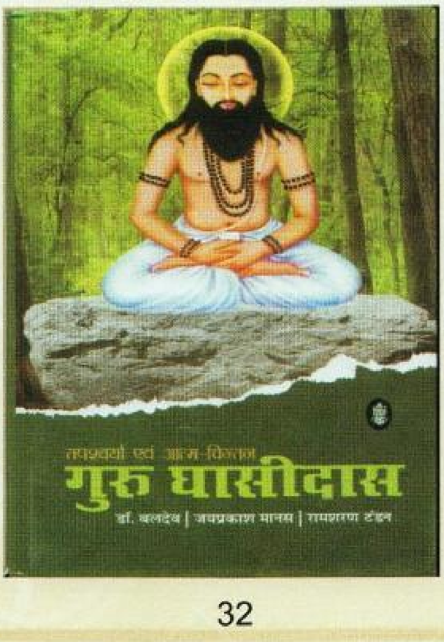

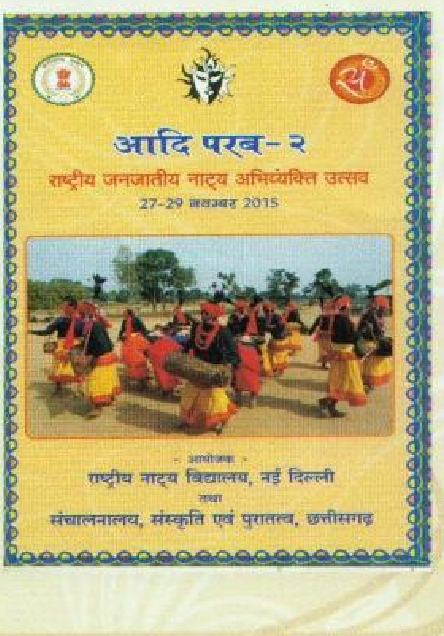

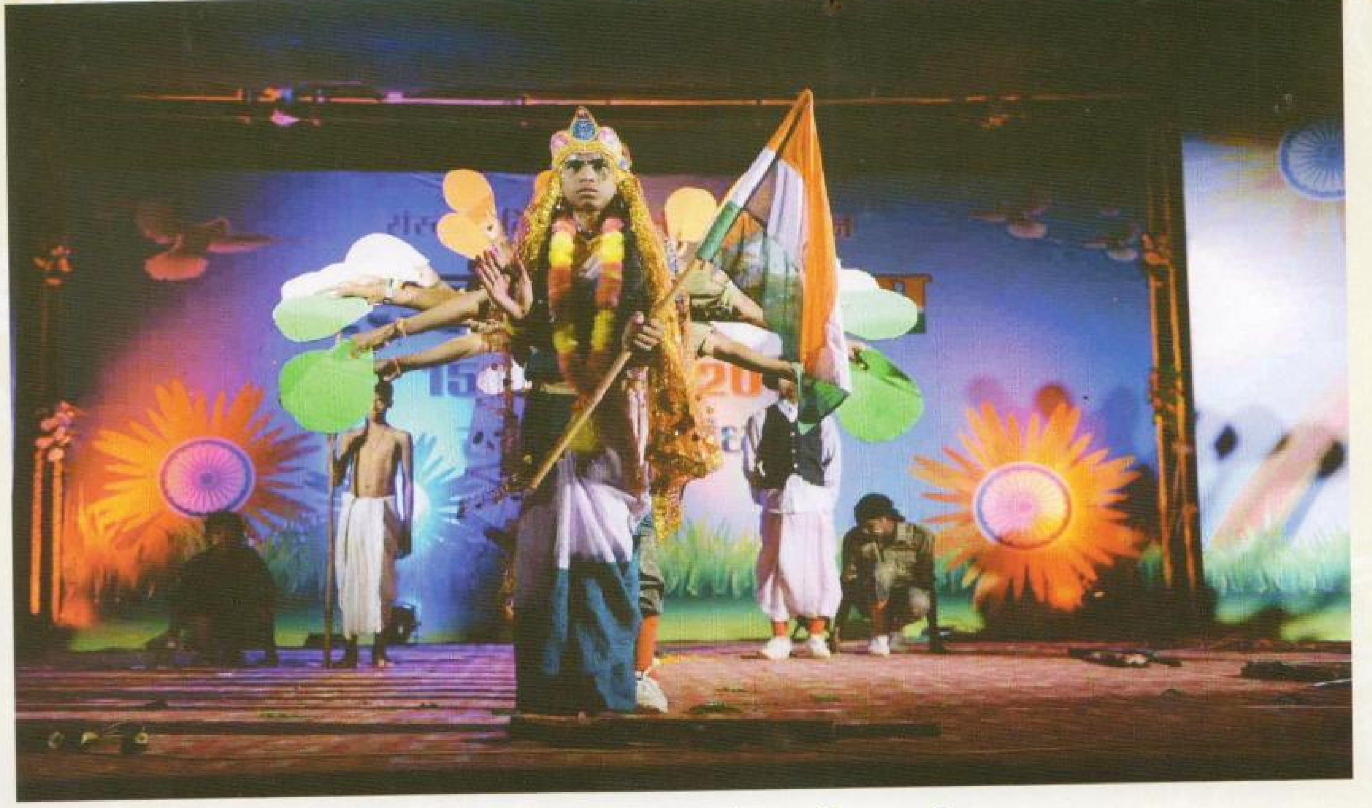

15 अगस्त पर आयोजित देश भक्ति कार्यक्रम

राज्योत्सव के अवसर पर आयोजित कार्यक्रम

गणतंत्र दिवस सांस्कृतिक संध्या 2016